भारतेन्दु-युग के पहले भी खड़ी बोली और ब्रजभाषा में छिटपुट स्तर पर गद्य लेखन के उदाहरण सामने आते हैं। ऐसे उदाहरण 19वीं शताब्दी के आरंभ तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि उसके पूर्व भी मौजूद हैं, तथापि हिन्दी-गद्य के आविर्भाव को हिन्दी नवजागरण के साथ जोड़कर देखा जा सकता है। आशय यह कि एक परिपाटी के रूप में गद्य लेखन भारतेंदु युग से शुरु होता है और जैसे जैसे भारतेंदु-युग से 20वीं और 21वीं शताब्दी की ओर हम बढ़ते जाते हैं, गद्य लेखन की यह परिपाटी विस्तृत और विकसित होती चली जाती है।

यहाँ यह प्रश्न सहज ही उठता है कि गद्य-लेखन

का आधुनिकता और नवजागरण से क्या सम्बन्ध है? इस परिप्रेक्ष्य में देखें तो 19वीं शताब्दी के नवजागरण के साथ आधुनिकता का भारत में प्रवेश होता है। आधुनिकता अपने साथ तर्क और बौद्धिकता को लेकर उपस्थित होती है। तर्क और बौद्धिकता मनुष्य केंद्रित धर्मनिरपेक्ष चिंतन को लेकर उपस्थित होता है। यही कारण है कि नवजागरण का आगमन भारतीय समाज में मध्यकालीन पारंपरिक मूल्यों और प्रगतिशील चिंतन की टकराहट को जन्म देती है। अब तक भारतीय समाज में मनुष्य के समस्त मूल्यों का स्रोत धर्म और ईश्वर था। इसके परिप्रेक्ष्य में सामाजिक मूल्यों, नैतिक मानदंडों और मर्यादाओं का निर्धारण होता था; लेकिन आधुनिक चिंतन का आगमन व्यक्ति की अनुभूति को कहीं अधिक महत्व देता है। इसके कारण मनुष्य एवं समस्त मूल्यों

और नैतिक मानदंडों के स्रोत के रूप में सामने आता है। इसी पृष्ठभूमि में मनुष्य के मूल्य समाज के मूल्यों से, उसके नैतिक मानदण्डों, समाज के नैतिक मानदण्डों से और उसकी मर्यादाएँ समाज की मर्यादाओं से टकराती है। इस क्रम में संस्कार और विचार का द्वन्द्व सामने आता है। व्यक्ति और समाज के साथ-साथ परंपरा और आधुनिकता की टकराहट आकार ग्रहण करती है।

यही कारण है कि आधुनिक काल में आकर मनुष्य का जीवन सहज और सरल नहीं रह पाता, वह जटिल से जटिलतर होता चला जाता है और उसके बारे में कुछ अनुमान लगा पाना मुश्किल होता चला जाता है। मनुष्य के इस संश्लिष्ट जीवन को अभिव्यक्ति देने में गद्य की सीमाएँ सामने आती हैं। कारण यह कि पद्य में भावों की सघनता होती है और एक प्रवाह का निर्वाह भी। जबकि

मनुष्य के इस कॉम्प्लिक्स्ट जीवन को अभिव्यक्ति देने के लिए विश्लेषण की जरूरत थी। स्पष्ट है कि मनुष्य के इस कॉम्प्लिक्स्ट जीवन को अभिव्यक्ति देने के लिए ठहराव और विस्तार की जरूरत थी। इसके पद्य का प्रवाह बाधित होता था, इसीलिए पद्य के विकल्प की तलाश शुरू होती है। गद्य इस विकल्प के रूप में सामने आता है, जिसमें ठहराव की भी गुंजाइश थी और रुककर विस्तार में जाने की भी। यही कारण है कि आधुनिक काल में गद्य का अचानक विस्फोट देखने को मिलता है जिसके मद्देनजर आचार्य शुक्ल ने आधुनिक काल को गद्य काल की संज्ञा दी है।